राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 85 15 मई 2004

सदस्यता शुल्क : ——————— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व जीवन-दर्शन	36
3.	बुराई एक मल है (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	37
4.	अनमोल वचन	38
5.	ज्ञान-सार	38
6.	स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग)	39
7.	सत्संग सार	41
8.	सतगुरु कृपा	43
9.	आवश्यक सुचना	44

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 94

दिनांक 3.10.92

समय ..... रात्रि

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया !!
राधास्वामी सहाय !!! राधास्वामी !

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! सभी सन्तों ने न्यारे—न्यारे हिसाब से रूक्का मारा है। एक प्रेमी ने मुझ से कहा कि आप आर्य धर्म की कुछ बातें समझा दो। मैंने कहा—जैसी हजूर की मौज होगी, वैसा ही होगा। मैं किसी चीज का ठेकेदार तो हूं नहीं। जैसे—दादू, पलटू, कबीर, नानक, रैदास, स्वामी जी महाराज तथा दूसरे महात्माओं ने जैसी उनको जंची वे कह गए उसी तरह मेरे विचार जो हैं, मैं भी आपको सुना दूंगा। उनका अधिकार था तो मेरा भी अधिकार होगा? जैसी बातें मेरी समझ में आएंगी मैं आपको बता दूंगा। मैं आर्य धर्म में कैसे आया था? मैं पहले ही कह देता हूं कि जब तक तुम आर्य नहीं बनोगे तब तक तुम कोई भी अच्छा काम नहीं कर सकते। आपको यह पता है कि आर्य, श्रेष्ठ पुरुष को कहते हैं। जब श्रेष्ठ ही नहीं बनोगे तो कुछ भी नहीं कर सकते। चाहे तुम किसी कौम के हो और चाहे तुम कुछ भी बन जाओ। किसी कौम जाति से यह आर्य धर्म नहीं बंधा है। सभी का बराबर है। पर मैं अपनी बातें बताता हूं कि मेरी पांच वर्ष की छोटी उम्र थी और गरीब हालत थी। साधु महात्माओं का संग किया। घूमता—फिरता रहता था। मैं परमात्मा से मिलने के लिए नहीं निकला था। मैं तो अपनी गरीबी पूरी करने और पेट भरने के लिए

ही निकला था। पर उन महात्माओं का रंग चढ़ते—चढ़ते चढ़ गया। इसी को कहते हैं कि जैसा संग होगा, वैसा ही रंग चढ़ जाता है।

हमारी रामायण को भी मैं पांचवा वेद कहता हूं। मैं जैसा कहूंगा, वैसा ही सिद्ध कर दूंगा। मैं रामायण की साखी कहता हूं—

दुष्ट संग न दिए विधाता।
ता ते भल कर नरकहिं बासा।।

जब दुष्टों के संग में इतना दुख लिखा है तो महापुरूषों के संग से क्या आदमी बदल नहीं जाएगा? दुष्टों के संग करने से एक सज्जन आदमी भी बदल जाता है। वह घटिया बन जाता है। फिर सज्जन आदमियों के संग से दुष्ट भी तो बदल जाएगा। सो मैं उनके पास जाया करता था। उनके पास जाते—जाते मैं वैरागी साधुओं के साथ बहुत घूमा, सारे मजहबों में गया। मैंने सभी के गुण लिए। मैंने किसी के अवगुण नहीं देखे। आप लोगों को पता है—मैं बाघपुर गांव में रहा करता था। गरीब हालत थी। वहां पाली (चरवाहा) था। भाई शेर सिंह का बाप और ताऊ हमारे रिश्तेदार थे। उन्होंने मुझे प्लाथी (आसन) लगाए बैठा देख लिया। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या किया करता है। मैंने कहा—मैं तो राम के नाम लिया करता हूं। उन्होंने पूछा कि किस तरह से लेता है। मैंने कहा—बताऊंगा नहीं। उन्होंने दबाव दिया कि बता दे। मैंने कहा—बताऊं? मैं अपनी बातें अब भी सच्ची बता देता हूं। जैसे भी मैं लेता था। मैंने अपनी बातें बता दी कि भाई मैं तो बिना ही गुरू के नाम लेता हूं। मैंने तो यही कहा था कि हे गूगा पीर! तेरा ही आसरा है। देवी माता! तेरा ही आसरा। हे बाबा हनुमान! हे राम! हे क ष्ण! बल्कि हमारा एक सरकारी सांड था, उसको भी कहा करता था कि हे सरकारी सांड़ ! तेरा ही आसरा। एक बड़बेरी थी उसे भी कहता था कि हे ढोलन माता ! तेरा ही आसरा। उसको बड़े—बड़े बेर लगते थे। मैं अपनी बातें बताता हूं। वे बोले—ये राम

नाम नहीं होते। सोचो ! मैं आपको क्या बता रहा हूं कि ये राम के नाम नहीं होते हैं। मैंने पूछा कि फिर क्या होता है? मैं राम—राम और सीताराम भी करता हूं। उन्होंने कहा—ये भी नहीं होते। मैंने उनसे पूछा—आप बता दीजिए। उन्होंने कहा—गायत्री का जाप किया करो। मैंने भगवान देव आचार्य से गायत्री सीख ली। मैं प्राणायाम भी करने लगा। गायत्री मुझे याद हो गई। मैंने गायत्री खूब जपी। उस तरह तो कोई कर भी नहीं सकता होगा। उस वक्त मुझे कोई मिला। पूछा—क्या जपते हो? मैंने कहा—गायत्री। उसने कहा—यह गायत्री तो गिनती है। यह गायत्री नहीं है। श्रद्धा तुड़वा दी। मैंने कहा—गायत्री क्या है? उसने बात बता दी और वह सच्ची बात थी। उसने बताया कि गायत्री तो कोई संत ही बता सकता है। अब मैं संतों की तलाश में था। लंबी मिसाल नहीं दूंगा। क्यों चक्कर में डालूं? उसी वक्त मुझे मेरे दाता अरमान साहब मिल गए, जूई में। वे मिले, मैंने उनसे पूछा। उन्होंने बता दिया। मैंने उनको बता दिया कि मैं बहुत घूमा। मैं ब्यास, आगरा और सभी जगह गया। सिरसा वाले बाबा मस्ताना जी ने मेरी मदद की। उनका मेरा बड़ा प्यार था। वे सच्चे थे। उनका कोई फंड नहीं था। जैसे ये आज फंड हो रहे हैं। उनकी रहणी क्या थी? उन्होंने सभी ऋद्धि—सिद्धियां तो रगड़ ही रखी थी। उनसे उन्होंने काम लिया। पर उनमें वे फंसे नहीं। आज कल वालों के पास कुछ नहीं है। वैसे ही डमरू बजाते हैं। दूसरों की बुराई करते हैं यह भक्ति नहीं है।

सो उन्होंने (बाबा मस्ताना जी ने) बड़ी अच्छी बात बताई कि तेरा सतगुरू वहीं है। मैं तो उनको छोड़कर महाराज जी के पास आ गया। महाराज जी ने मुझ से बातचीत की। एक दो बार उनके पास गया। उन्होंने पूछा—क्या चाहता है? मैंने कहा—मैं नाम चाहता हूं। उन्होंने कहा—मैं पहले तुझे आर्य धर्म सिखा दूं फिर तू नाम लेना। मैंने कहा—मुझे कुछ भी बता दो। पर मुझे आप वह

वस्तु दे दो। मैं उस वक्त एक साधु के वेष में था। एक लंगोटी ही रखता था। कपड़े नहीं पहनता था। बाबा जी बन गया था। उन्होंने कहा—क्या तू आर्य धर्म सीखना चाहता है। मैंने कहा—हां जी! उन्होंने कहा—आर्य धर्म में तो यह नहीं लिखा कि एक लंगोटी डाल कर कोई चढ़ावा आया वही खाये और रोटी मांगे। तू भीखमंगा बन गया है। तू तो 15 आदमियों का पेट भर सकता है लेकिन भिखारी बनकर प थ्वी पर भार हो गया है। जब एक आदमी 15 आदमियों का पेट भर सकता है और वही भीखमंगा बन जाता है तो फिर साधु कहां बना? मैं तुझे आर्य धर्म सिखा कर आर्य बनाना चाहता हूं। उन्होंने आगे कहा—आर्य समाजी नहीं बनाऊंगा। आर्य धर्म सिखा दूंगा। मुझे भ्रम हो गया। मैंने तो आर्य समाजियों से गायत्री सीखी थी और इन्होंने क्या बात कही? मैंने पूछा—महाराज जी! आर्य धर्म और आर्य समाज में भी कुछ फर्क है क्या? उन्होंने कहा—हां फर्क है। आर्य तो सभी का धर्म है। आर्य समाज दूसरी चीज है। समाज में तो बुरे आदमी भी आ जाते हैं। रोजगारी भी आ जाते हैं। वे फंस जाते हैं। पर जिसने आर्य धर्म अपना लिया है वह कभी भी गलती नहीं करेगा। मैंने कहा—सिखाओ। उन्होंने कहा—पहला काम तो यही है कि कपड़े पहन और कमाकर खाओ। उन्होंने मुझे कबीर साहब की साख दी थी। वे पूर्ण पुरुष, पूर्ण धनी थे। उन्होंने अपनी तानी तनी। मैंने यह बात मान ली। दादू जी, कबीर जी, नानक जी आदि सब संतों के प्रमाण दे दे कर बताए। उन सभी ने आर्य धर्म अपनाया। मेरे दिमाग में ये बातें ठीक जंच गई। कमाकर खाने की बात भी मैंने मान ली। उन्होंने कहा—और सुनो। जिन्दगी भर किसी शराबी कबाबी के घर की रोटी मत खाना। कोई शराब पीता हो या बेचता हो तो उसके घर की रोटी न खाना। मैंने कहा—बिल्कुल ठीक है। उन्होंने कहा—लड़कियों के हाथ पांव को नहीं लगवाना। मैंने कहा—मैंने

तो कभी लगवाये ही नहीं हैं। उन्होंने कहा—नहीं, जो मैं कहता हूं उसे मान। मैंने कहा—मैंने मान ली। मैं कभी भी लड़की के हाथ नहीं लगवाऊंगा। उन्होंने कहा—अकेली औरत से कमरे के अंदर बात नहीं करेगा। उसके साथ में और कोई हो तो बात कर लेना। नहीं तो भीतर जाकर बात नहीं करना। मैं आपको खुला कह देता हूं। कोई भी महात्मा यहां आकर ये बातें कहे तो। सब का शरीर कांपता है। मैंने कहा—मैं मान गया हूं। उन्होंने कहा—तेरी संगत बहुत हो जाएगी। भारी पैसा आएगा। तू संगत के पैसे अपने लिए नहीं बरतना। मैं तो भिवानी आश्रम का न ट्रस्टी हूं और न मेंबर हूं। दिनोद वाले आश्रम के काम भी और ही करते हैं। मुझे तो पता नहीं है। मैं तो दादरी वाले आश्रम का भी मेम्बर नहीं हूं। मैं तो आप लोगों का एक मजदूर हूं। मजदूरी कर देता हूं और वेतन नहीं लेता हूं। पर मेरा वेतन बड़ा डबल है। अगर तुम दे दोगे तो। मैंने आप लोगों को आर्य धर्म सिखाया है। उस धर्म पर अटूट—मजबूत रहो। मेरा यही वेतन है। अगर तुम गिर गए तो मेरा भी सत्यानाश ही कर दोगे। मैं अपना वेतन बताता हूं। आप लोगों को ऊपर चढ़ाता हूं। मेरे गुरू महाराज ने ये बातें सिखाई। उन्होंने यह भी कहा कि जब तक पचास वर्ष का न हो जाए अपनी बराबर की आयु वालों के साथ न बैठना। शामलात में आश्रम न बनाना। थोड़ी सी शामलात जमीन पर मोहब्बत और उसके साथियों ने कब्जा कर लिया था। मैंने कहा—तुम्हारे पास ये जमीन रह नहीं सकती है। इन्हें लेने के देने पड़ गए।

सो मेरे सतगुरू पूर्ण पुरुष और पूर्ण धनी थे। इस मुंह से उनकी बड़ाई नहीं कर सकता हूं। उन्होंने बताया कि मैंने आपको आर्य समाजी नहीं बनाया। मैंने कोई राधास्वामी मत वाला भी नहीं बनाया। मैंने तो राधास्वामी दयाल की शिक्षा दी है। यही शिक्षा राधास्वामी दयाल की है। यही कबीर, दादू, पलटू और रैदास की

है। सबकी शिक्षा यही है और यही शिक्षा मैंने आपको दी है।

इस शिक्षा पर जो चलेगा उसे पूर्ण आर्य धर्म को मानने वाला कहते हैं। जब संत चले जाते हैं तो फिर जत्थे बन जाते हैं। जत्थों में फिर दोष आ जाते हैं। आप समझते हो? फिर उनमें घटिया आदमी आ जाते हैं। लालची फंस जाते हैं वे उनका सत्यानाश कर देते हैं। गुरू नानक साहब से पहले कोई नानक पंथी नहीं था। कबीर साहब से पहले कोई कबीर पंथी नहीं था। दादू जी से पहले कोई दादू पंथी नहीं था। स्वामी जी से पहले कोई राधास्वामी वाला नहीं था। घीसा साहब से पहले कोई घीसा पंथी नहीं था। गरीब दास जी से पहले कोई गरीबदासी नहीं था। इसी तरह महर्षि दयानन्द से पहले कोई आर्य समाजी नहीं था। आर्य धर्म था। मैं आप लोगों को बताता हूं कि मेरे गुरू की दया थी। उन्होंने ही बताया था कि पहले परम्परा से आर्य धर्म था और आर्य धर्म को ही जितने भी संत हुए सभी लेकर चले हैं। मैं भी कहता हूं कि अगर तुम आर्य धर्म नहीं मानोगे तो गिर जाओगे। भक्ति तो किसी तरह भी नहीं कर सकते हो। जैन मत में भी आर्य धर्म की शिक्षा दी जाती है। सरावागियों में भी आर्य धर्म बताया जाता है। आर्य धर्म क्या है? यही है कि शराब मत पीओ, मांस मत खाओ। चोरी मत करो, जारी मत करो। बदमाशी मत करो। दूसरों की निंदा मत करो। आपने यह तो सुना है—

बुरा खोजन मैं गई, बुरा न पाया कोय।
जो तन खोजूं आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

कबीर साहब कहते हैं कि अपने तन को खोज कर देखता हूं तो मुझ से बुरा कोई भी नहीं है। ऐ इन्सान ! अपने आप से बुरा कौन है? हम स्वयं की निंदा करते हैं। हम बिष्ठे की मक्खी बन जाते हैं। मधुमक्खी बन कर दिखाओ। जब तुम आर्य धर्म को पकड़ लोगे तो मधुमक्खी बन जाओगे। यदि तुम समाजी ही बन

गए तो बिष्टे की मक्खी ही बन जाओगे। मेरी बात पर ख्याल करना मैं क्या कहता हूं। कई डंका, ढ़ोलकी व तबले बजाकर अपना चंदा उगाहना शुरू कर देते हैं। अपने बेटों पोतों को खिलाते हैं। वह औलाद बिगड़ जाती है। संतों ने अपना कमा कर खाया और किसी का घर नहीं उजाड़ा। न ही किसी संत ने किसी की बुराई ही की। मैं खुला क्यों बोलता हूं? मुझे सतगुरू पूरा मिल गया। इसीलिए खुला बोलता हूं। मैं गांव का गांव में हूं। पर मैंने किसी का घर नहीं उजाड़ा क्योंकि मैं आर्य धर्म को जानता हूं। मैंने तो आर्य धर्म को मजबूती के साथ पकड़ा। मैं समाजी नहीं बना। राधास्वामी मत में भी एक समाज बन गया है। इनमें भी गिरावट आती जा रही है। काफी मजहबों वाले मेरे पास आते हैं। राधास्वामी मत वाले भी मेरे पास आकर पूछ लो। उन्हें यही पता नहीं कि मंजिल या स्थान कितने हैं। मैं छिपकर नहीं कहता हूं। मैं यहां दिनोद बैठा हूं। मेरे पास कोई आए। जिसने राधास्वामी मत से निकलकर ठेके बना लिए हैं उन्हें यह पता नहीं है कि हमारे मार्ग के स्थान कितने हैं? उस धाम में पहुंचने के लिए रास्ते में आने वाले स्थान और धुनियों का भी पता नहीं है। वे धर्म को छोड़ गए और मजहबी बन गए। जत्थे बना लिए। समाज बना लिए। समाज बनाते ही दुख आ जाता है। इस मत वालों ने भी अपने समाज बना लिए। मैं ये बातें क्यों कहता हूं? यह मेरी डियूटी थी। इसीलिए कहता हूं। सतगुरू का हुकम था कि सच्चाई से काम करना। आपने देखा है कि कहीं पर्चियों से गुरू बनता है और कोई अपने बेटे पोतों को गद्दी दे जाता है। अपनी घर की जायदाद बना लेते हैं। यह आर्य धर्म नहीं आर्य समाज है। ये सभी समाजी बन गए हैं। उनमें कुछ भी बाकी नहीं रह गया है। मेरे गुरू ने तो यही शिक्षा दी थी कि इस रीति पर चलना। जाओ काम बहुत होगा। क्या ये बातें किसी ने सिखाई हैं? ये राधास्वामी वाले, दादू, पलटू,

कबीर पंथी बैठे हैं, किसी ने भी ये चीजें बताई हैं तो बताओ? कोई भी तो नहीं बताता है। मेरे गुरू महाराज ने वह शिक्षा मुझे दी थी। क्योंकि वे बड़े भारी उच्च चोटी के वैद्य थे। डाक्टर थे, डाक्टर वही बड़ा माना जाता है जो बिमारी देख उसी का टीका लगा देता है। वे समझ गए थे कि ये इस टीके के काबिल है। इस इंजैक्शन से इसका इलाज होगा। उन्होंने वही इंजैक्शन लगा दिया। प्रेमियो, सत्संगियो! मैं भी आपको कहता हूं कि कोई ये न कहे कि गलत बोलते हो। कबीर साहब आर्य धर्म को मानने वाले कहां थे? पर वे आर्य धर्म से बाहर कहां से थे? कबीर साहब कहते हैं—

तिल भर गोश्त खाय के, कोटि गऊ दे दान।
काशी करौंत ले मरै, फिर भी नर्क नादान।।

क्या यह आर्य धर्म नहीं है? क्या कबीर साहब ने यह नहीं कहा?

नारी की झाईं पड़ै, अंधा होय भुजंग।
तिन की कौन गति, नित रहें नारी के संग।।

क्या ये आर्य धर्म की बातें नहीं हैं? पराई औरतों के मुंह चाटना तो दुष्टों का काम होता है। यह भी कहा है—

घर में रहो, कमा कर खाओ।
पर धन पर तिरिया से नेह न लगाओ।।

उन्होंने कभी भी यह नहीं कहा कि लूटो, खाओ, औलाद को पालो। यह उनका पक्का आर्य धर्म था। अगर किसी कबीर पंथी को आपत्ति हो तो मेरे पास आकर पूछ लो। वे तो आर्य धर्म के पक्के मानने वाले थे। आर्य धर्म को पक्का मान कर ही आगे चलना पड़ता है। जब तक हम आर्य धर्म को नहीं मानेंगे हम कभी भी आगे कदम नहीं उठा सकते हैं। मैंने अपने गुरू से ये बातें सीखीं। आर्य धर्म को समझा। उन्होंने आगे बताया कि अब सुरत—शब्द का योग करना है। इसे सहज योग भी कहते हैं। मैंने

कहा—ठीक है। योग मिलाप को कहते हैं। किसका मिलाप करना है। आत्मा और परमात्मा का मिलाप करना है, सनातनी भाई ऐसा कहते हैं। संत मत वाले इसी को सुरत और शब्द का मिलाप कहते हैं। सो इस चेतन शक्ति को समेट कर उस शब्द की धार से मिला लो। इसी को सुरत शब्द का योग कहते हैं। दोनों मिल जाते हैं और नाम तो कोई भी नहीं है। नाम तो बस एक ही है उस मालिक का। वह धुनात्मक नाम है। वही सारी दुनिया की जान है। पर आर्य धर्म को लेकर चलोगे तब तुम्हें आगे धुनि मिलेगी। कब मिलेगी? क्या आपको पता नहीं है? कबीर साहब कहते हैं—

कामी, क्रोधी, लालची गुरू इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोय।।

क्या कबीर की यह बात आर्य धर्म की बात नहीं है? ये सभी आर्य धर्म की ही तो बातें होंगी? यही तुलसी दास ने कह दिया है—

काम, क्रोध मद लोभ की, जब तक घट में खान।
तुलसी पंडित और मूर्खा, दोनों एक समान।।

यही आर्य धर्म है। जब तुम आगे चलने की तैयारी करो तो पहले इन नियमों का पालन करो। मैं क्या बताता हूं? मैं चोर नहीं हूं। सीधा आदमी हूं और सीधी ही बातें कहता हूं। मेरे पास आए हो। मैं सभी से शराब का नेम करवाता हूं। अगर तुमने शराब पी ली तो तुम आर्य धर्म से गिरे या नहीं। अगर शराब न पीने का नेम कर लिया तो आर्य धर्म को माना कि नहीं? कौन कहता है कि हम राधास्वामी मत वाले आर्य नहीं हैं। हम भी आर्य हैं। पर राधास्वामी मत में जो गुरूडम है वे आर्य नहीं हैं। संतों ने गुरूडम नहीं माना है। इसे तो हमारे जैसे रोजगारियों ने मान लिया है कि गुरू के दर्शन कर लो। बस। बेड़ा पार हो जाएगा। नहीं, दर्शनों से पार नहीं होगा। रोटी को देखने से भूख नहीं मिटेगी। काम करने से ही काम बनेगा। क्या गुड़ गुड़ कहने से मुंह मीठा हो जाएगा? कई

लोग तर्क—वितर्क करते हैं कि नींबू कटने से मुंह में पानी आ जाता है। नींबू कह कर रोटी खा लो। क्या खाई जाएगी नींबू के साथ? ये गलत बातें हैं। जब हम काम करेंगे तभी हमें पता लगेगा। गुड़ खाएंगे तभी मुंह मीठा होगा। सो जिन्होंने ये नाम लिया है, उन्हें एक नेम सबसे बड़ा सबको ही मानना पड़ता है चाहे जैनी हो, चाहे सरावागी, चाहे हिंदू हो, चाहे मुसलमान, सभी धर्मों में शराब को बुरा मानते हैं। इन मतो में जिन्होंने शराब छोड़ दी वह बड़ा भागी है। शराब जिसने छोड़ दी वह बेशक परमात्मा को याद मत करो। वह एक दिन ब्रह्म में लीन हो जाएगा। यह बता देता हूं क्योंकि यही सबसे बड़ा पाप है। शराब छोड़ने वाला तो आर्य बना बनाया है। एक दिन पूर्ण आर्य बन जाएगा। सारे पापों की जड़ यही है। जैसे सारे बीजों का बीज एक पानी ही है। इसी तरह से सारे पापों की जड़ शराब है। सो मैंने आप लोगों को यही बताया है कि कबीर साहब ने भी आर्य बताया है। नानक साहब ने भी आर्य धर्म बताया है। नानक साहब ने कहा है—

जै रत लागे कापड़ा, जामा होय पलीत।
जै रत पीवै नानका, कस हो निर्मल चित्त।।

नानक साहब ने कहा है कि एक खून का छींटा भी लग जाता है तो कपड़ा भी नापाक हो जाता है। उसे धोना पड़ता है। जो एक—एक दो—दो किलो मांस अपने अंदर डाल लेते हैं क्या वे महात्मा कहलाने के काबिल हैं? उनकी सारी शिक्षा ही आर्य धर्म पर है। वे आर्य धर्म के बड़े भारी खंभ थे। उनके ग्रंथ को देखो। कहीं भी ये बातें नहीं पाएंगी कि शराब पीओ, अंडे मांस खाओ। खोटे कर्म करो। कहीं भी नहीं लिखा उन्होंने। उन्होंने तो इनका खंडन ही किया है। सोचो! उन्होंने आर्य धर्म की नींव रखी थी। यही दादू जी की बातें हैं। यही बातें रविदास जी की हैं। रविदास जी कहते हैं—

पर तिरिया को भोगते खाये जीव का मांस।
इतने तो दोजख जाएगे कहता है रविदास।।

क्या ये आर्य धर्म की शिक्षा नहीं है? सो जो आर्य बने बैठे हैं और वे दूसरों की औरतों का मुंह चाटते हैं, दूसरों के खेतों की मेढ़ काटते हैं, क्या उन्हें आर्य कहना ठीक है?

कहते हैं कि हमारा मस्तक है यह तो हमारा ब्रह्म है। हाथ हैं ये क्षत्री हैं। पेट हमारा वैश्य है। चरण हैं ये शूद्र हैं। इन लोगों ने तो बाहर चार वर्ण बना लिए। गरीबों को कह दिया कि ये शूद्र हैं। मैं अपने विचारों से कहता हूं। शूद्र को शूद्र बताता हूं। फिर कह दिया कि शूद्रों को शास्त्र नहीं सुनाना। आप कहोगे कि क्या आप भी उनमें मिल गए। हां, बिल्कुल। उस बात को आप लोग नहीं समझे हो। मैं समझा दूंगा। उन महापुरुषों ने बातें कही थी कि शूद्र को ग्रंथ न सुनाना। उनके कान में पारा भर दो। मैं भी कहता हूं कि उस शूद्र को उपदेश न देना। उसके कान में पारा भर दो। शूद्र किसको कहते हैं? शूद्र तो वही है जो शराब पीता है और मांस खाता है। जो खोटे कर्म करता है उसका नाम शूद्र है। शूद्र उनको ही बताया है। शूद्र किसी जाति को या विशेष काम करने वालों को नहीं बताया।

दो ही जातियां हैं— स्त्री और पुरुष। खोटे काम करने वाले को घटिया और ऊंचे काम करने वाले को बढ़िया कहने लग जाते हैं। इसी वजह से भीलनी भी ब्राह्मणी थी। रविदास जी भी ब्राह्मण थे। जो ब्रह्म में लीन हो गया वही ब्राह्मण हो जाता है। ये बात गलत हो तो मेरे से बात कर लेना। पर मैं गलत बातें नहीं कहूंगा। ब्रह्म में जो लीन है, आर्य धर्म का है। कोई ऐब नहीं है, वही ब्रह्मलीन महात्मा माना जाता है। सो किसी की कोई बात नहीं है। ये सब झगड़ेबाजी कर लेते हैं। इसीलिए हमारा मस्तक है—वह ब्राह्मण है। लोगों ने कहा कि ब्राह्मण न्यारा है, क्षत्री न्यारा है,

वैश्य न्यारा है। संतों का मार्ग है—मस्तक से जो बातें निकलती हैं वे ब्रह्म की बातें निकलती हैं। हाथ क्षत्री हैं, कहीं भी शरीर पर चोट पड़े, पहले हाथ ही अड़ते हैं। ये ही सहायता के लिए आते हैं। पेट वैश्य क्यों है? जैसे सेठ—साहूकार खाना दिया करते थे, मदद किया करते थे। पेट में खाना जाता है, और उस भोजन को सारी रगों में बांट देता है। इसी कारण से इनको वैश्य माना गया है। शूद्र हमारे पैर हैं ये तीनों जातियों को उठाए फिरते हैं। लोगों ने बना लिया कि इन ऊपर की तीन जातियों की सेवा करें। अगर शूद्र रूष्ट हो जाते हैं तो तीनों के तीनों ही मर जाते हैं। सो इनमें से कोई एक भी रूष्ट हो जाए तो सारे ही मर जाते हैं। अगर वैश्य रूष्ट हो गया तो कहीं भी जगह नहीं है। पेट की बिमारी खराब कर देगी। हाथ ही दोनों कट जाते हैं तो भी मारा जाता है। अगर सिर में कोई कमजोरी हो गई या पागल हो गया फिर भी दुर्दशा हो जाएगी। यहां तो चारों का ही सहयोग चलता है। महात्माओं ने शरीर में तो यही बताया है। पलटू जी ने तो इस बारे में बड़ी अच्छी बातें कही हैं—

साहेब के दरबार में केवल भक्त पियार।
साहेब भक्ति से राजी.....।
तजे दुर्योधन के पकवान, खाए दासी सुत भाजी।।
जप, तप, नेम, आचार करे बहुतेरा कोई।
खाए शिबरी के बेर, ऋषि मुनि सब रोई।।
रचि युधिष्ठिर—यज्ञ, बटोला सकल समाजा।
मरता सब का मान, सुपच बिन घंट न बाजा।।
पलटू ऊंची जात का, मत कर कोई अहंकार।
साहिब के दरबार में, केवल भक्त पियार।।

चरणदास जी यूं कहते हैं—

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणे।।

हमारी गीता भी यही कहती है—

ब्रह्म पिछाणै सोई ब्राह्मण।

गीता में भी यही बातें आती हैं और चरणदास जी भी यही कहते हैं। ढूसर कुल के बणिये थे। सहजो बाई के वे गुरू थे और वे सुकदेव के चेले थे। ''भक्ति सागर'' में उन्होंने लिखा है—

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणै।
बाहर जांदा भीतर आणै।
पांचों वश कर झूठ नहीं भाखै।
दया जनेऊ घट में राखै।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार न होई।
चरण दास ब्राह्मण है सोई।।

आप बताओ उसमें कौन सा गुण आया। उसमें तो एक ही गुण माना गया है। जो भगवान में लीन हो जाता है। वह सारे ऐब छोड़ देता है। उसको किसी ने ब्राह्मण कह दिया, किसी ने आर्य कह दिया, किसी ने उसको गुरू का प्यारा कह दिया। सारी बातें एक ही जगह आ जाती हैं कि ऐब छोड़ दो। मैं इस बात का निर्णय यही बताया करता हूं कि पहले आर्य बनो। अगर आर्य नहीं बने तो तुम सनातनी कभी भी नहीं बन सकते हो। सनातनी बनकर ही सन्त बनोगे। सनातनी नहीं बनते तो तुम कभी संत भी नहीं बन सकते हो। ये सभी आर्य धर्म की बातें हैं। आर्य धर्म को अगर मानोगे तो आर्य धर्म पर चलते—चलते तुम्हारे दिल में एक लहर उठेगी कि हम उस परमात्मा की भक्ति करें। यह तो पता है ही कि पवित्र भांडे में ही दूध डाला जाता है। इसी तरह से जब तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा और सभी ऐब छुट जाएंगे। तो तुम्हारे अंतःकरण के शुद्ध व पवित्र होते ही लहर उठेगी कि हम अब परमात्मा की तलाश करें। वह परमात्मा तुम्हारे अंदर ही तो है। महात्मा कहते हैं—

क्यों फिरै भटकता बन में, तू देख उलट कर मन में।

महात्मा यह भी कहते हैं—

ज्यों तिल माहिं तेल है और चकमक माहिं आग।
तेरा प्रीतम तुझ में है जाग सके तो जाग।।

वह मालिक तेरे अंदर बैठा हुआ है। अगर तू तलाश करना चाहता है तो। सो हमारे पवित्र होते ही, हमारे मन में लहर उठेगी। तब हम उस मालिक को तलाश करेंगे। उसको कब तलाश किया? जब आर्य बने। उसको तलाश करने वाले तुम्हारे ही विचार हैं। वह परमात्मा है, वह सनातन है। सनातन का मतलब जांडी पूजना नहीं है। मूर्ति पूजा भी सनातन धर्म नहीं है। सनातन का मतलब है जो परम्परा व प्राचीनतम वस्तु है। जिसका कभी नाश नहीं होता है और वह किसी के सहारे पर भी नहीं है। वह अपने ही सहारे पर है। वह कुल का खाविंद सब का एक है। सारी दुनिया का कर्ता ही एक है। उसको कोई शब्द कहता है, कोई ज्ञान कहता है। कोई विवेक और कोई रमा हुआ राम कहता है। उस परमात्मा की शरण में जाओ और उसकी तलाश करो। उसको याद करना ही सनातन धर्म है। पर हम सनातनी कब बने? आर्य बनकर ही हम सनातनी बनते हैं। उस परमात्मा की तलाश करते—करते हम ध्यान में लीन हो जाएंगे। फिर अगर हम वहीं ठहरे रहें तो हमें ब्रह्मलीन महात्मा कहा जाएगा। अगर आगे का कोई सतगुरू मिल जाता है तो वह ब्रह्म से आगे ले जाता है। बात ऐसी ही आ जाती है। आप फिर एतराज करोगे। वेद ब्रह्म का वर्णन करते हैं पार ब्रह्म का नहीं। पारब्रह्म का जहां वर्णन आता है तो वेद ने खुद ही कह दिया कि—**नेति—नेति (न+इति)।** वे इन वेदों का वर्णन करते हैं। ब्रह्म का जो वर्णन करते हैं, वे ब्रह्मलीन बन जाते हैं। उससे आगे कोई काबिल महात्मा मिल जाता है, बताता है कि यहां शांति नहीं है, सो और आगे चलो। आगे चल कर वही संत बन जाता है। संत तो

शब्द के मिलते ही बनता है। ये चार शब्द काल के है। उनको छोड़कर जो आगे चला जाता है वह सतखण्ड में पहुंच जाता है। सो उसकी धुनि आगे लग जाती है। वह दोनों को तय कर जाता है। आर्य धर्म को भी तय किया और उसने सनातन को भी समझ लिया। फिर वह संतमत में चला जाता है। उसको उस जगह पर किसने पहुंचाया? आर्य धर्म ने। उस जगह पर तो मंजिलों—मंजिलों ही पहुंचता है। छलांग लगाकर तो कोई भी नहीं जाता है। क्या कोई वहां छलांग लगा कर गया? याद करो। आर्य धर्म को ही पकड़ कर सब जाते हैं। इसीलिए आर्य ठीक ही कहते हैं कि आर्य सबसे बड़ा धर्म है। वे आर्य ही कहते हैं कि आर्य बड़ा है। नहीं, आर्य बड़ा नहीं है। आर्य धर्म बड़ा है। आर्य समाज बड़ा नहीं है। आर्य समाज में तो बड़े—बड़े, खोटे—खोटे कर्म करते हैं। आर्य समाज तो सभी की बुराई करता है। अगर कोई कहे कि राधास्वामी मत अच्छा है। इसमें तो बहुत घटिया आदमी भी भरे हुए हैं। रोजगारी भरे पड़े हैं जो गुरूओं को भी धोखा देते हैं। कल मैं एक गांव में गया था। वहां लोगों ने कहा—राधास्वामी मत वालों ने एक गाय को मार दिया। आप बताओ, क्या उन गाय मारने वालों को आप राधास्वामी मत वाले कहोगे? शर्म आनी चाहिए। उन्हें तो कसाइयों की औलाद कहो जो गौ मार देते हैं। उन्होंने आर्य धर्म को नहीं अपनाया था। सो उनकी मैं बड़ाई नहीं करता। नाम लेने से बड़ा नहीं होता है। काम करने से बड़ा होता है। मैंने तो नाम लेकर काम किया था। सो ही मैं आप लोगों को बताता हूं। मैंने उनसे पूछा—वे कहां के थे। वे कहीं के भी हों, चाहे वे ब्यास के हों या आगरा के। आखिर थे तो वे सत्संगी ही। उन्होंने ये जुल्म किया तो क्या अच्छा किया? यह तो बड़े से बड़ा जुल्म है। क्या आप उन्हें फिर भी सत्संगी कहोगे? लानत है।

जो गुरू बन कर चेलियों से पांव दबवाता है उनके साथ

बुरे—बुरे कर्म करता है क्या तुम उसको सतगुरू कहोगे? यह तो बड़े गजब की बात है। उसे सतगुरू कहने वाला भी पापी है। इन गुरूओं ने यूं ही तो देश का सत्यानाश कर दिया। अपना पाखण्ड और ढोंग रच लिया। इन भोले—भोले भक्तों की और माई—बाइयों की गांठ काट—काट कर अपने डेरे बनाए और अपने बच्चे पाले। अपना घर बनाया। मरते वक्त अपने ही बेटे पोतों को गद्दी देकर चले गए। क्या वे ग हस्थियों से भी गए गुजरे नहीं हैं? सतगुरू का घर बड़ी दूर है, किसी को पहुंचना हो तो। इस बात को तो कोई विवेकी ही पूछ सकता है। सो मैंने आप लोगों को धर्म बताया है। अगर धर्म में ही ऐसा होता तो गुरू नानक साहब भी अपने ही बेटों को गद्दी देकर जाते। अंगद साहब गुरूमुख थे वे भी अपने ही बेटों को गद्दी देकर जाते। अमर दास जी भी अपने ही बेटों को गद्दी देकर जाते। पर उन्होंने तो गद्दी रामदास को ही दी। इनके बाद में उनकी लड़की ने उनसे वरदान मांग लिया। उनके बाद सात गुरू और भी हुए। वे सातों वरदान के गुरू हुए हैं। सतगुरू तो तीन ही बने थे। सतगुरू तो सतगुरू ही होता है। सतगुरू धुर से आता है। वह मैदान में आता है। सतगुरू भीख—मंगा नहीं होता। तुम कहते हो कि राधास्वामी नाम मिल गया है और यह भी कहते हो कि राधास्वामी नाम चौथे लोक से भी आगे है। नाम तो राधास्वामी मिल गया है और मांगते फिरते हो भीख। लानत है आपको। आपको राधास्वामी नाम ही नहीं मिला। हम कहते हैं कि हम आर्य हैं और हम आर्य धर्म को ही मानते हैं। आर्य धर्म को मानने वाला भीख नहीं मांगेगा। आर्य धर्म को तो भारद्वाज ऋषि ने माना था। आर्य धर्म को तो वशिष्ट जी ने माना था। उन्होंने कामधेनु गाय प्रगट कर ली। ओ३म् है, इसमें बड़ी भारी ताकत है। पर वह ताकत कब प्रगट होगी? आर्य धर्म को मानो। तीन लोक में तो ओ३म् बहुत बड़ा है। इतना काम करता है, जैसे भरत जी गए थे और भारद्वाज

ऋषि ने उनकी सारी ही सेना को एक छोटी सी कुटिया में से खाना निकाल कर खिला दिया। भरत जी ने पूछा—इस छोटी सी कुटिया में इतना ज्यादा सामान कैसे आया? भारद्वाज जी ने कहा—मेरे पास कामधेनु गाय है। वह काम धेनु गाय आज तक किसी ने देखी भी है? क्या आज तक उस कल्पतरू व क्ष को देखा है? वे कामधेनु गाय और कल्प तरू व क्ष ओ३म् ही तो है। यह तीन लोक में है। ओ३म् का जाप लोग जुबान से करते हैं। अगर ओ३म् की धुनि में कोई पहुंच जाए तो वह कभी भी किसी के आगे हाथ नहीं पसारेगा। उस धुनि में पहुंचकर कर्ता के भी कर्ता बन सकते हैं। पर चंदा कब मांगते हैं ये? ये चंदा तो इसी कारण मांगते हैं क्योंकि ये ओ३म् का बाहरी जाप करते हैं, ओ३म् की धुनी तक नहीं पहुंचते हैं। अगर कोई गारंटी चाहता है कि क्या ओ३म् की धुनि भी होती है। आप आर्य धर्म को अपनाइए। सत्संग में हमारी तो कई—कई लड़कियां भी इस मंजिल पर पहुंच जाती हैं। वे अभ्यास करती रहती हैं। उन्हें बड़ी शांति आ जाती है। कई—कई भाई जो इस धर्म को मंजूर कर लेते हैं उनका पर्दा खुल जाता है और वे अंतर की धुनि को बता देते हैं। ओ३म् की बड़ी मोहिनी धुनि हर वक्त होती रहती है। वहां कमल के फूल में से धुनि निकलती है। उसी धुनि से चारों वेद बने हैं। उसी धुनि से ही उपनिषद् और पुराण बने हैं। उस धुनि से ही, जो कुछ भी दिखता है सभी कुछ बना है। वह बड़ी मन मोहिनी धुनी है अगर कोई उस धुनी में जाने वाला हो तो। पर तुम कब जा सकते हो? जब तुम आर्य धर्म को मंजूर कर लोगे। आर्य धर्म को मंजूर करने से, फिर तुम्हारी व त्ति एकाग्र हो जाएगी। व त्ति एकाग्र होने से रास्ता खुल जाएगा और तुम अपने घर चले जाओगे। नहीं तो कभी नहीं जा सकते हो। तुम सारी जिन्दगी कितनी ही दूसरों की बुराई करते रहो, तुम अपना ही मुंह काला करके चले जाओगे। सो ही मैंने बता

दिया कि ओ३म् तीन लोक में बड़ी भारी शक्ति है। पर ओ३म् मुक्ति के लिए नहीं है।

औम् नाम त्रिगुण–विषय ये तीन लोक की नीत।
चौथे पद के हाल को वे क्या जाने मीत।।

ओ३म् तीन गुणों से ही बनता है– अ–उ–म्। इन तीन गुणों से ओ३म् बन जाता है और इन तीन गुणों के तीन देवता भी हैं। अ से स ष्टि की रचना होती है। उ से स ष्टि का पालन होता है। म से संहार होता है। अ से ब्रह्मा, उ से विष्णु और म् से महेश जी (शंकर जी महाराज) हो गए। अ से रजोगुण, उ से सतोगुण, म् से तमोगुण होता है। अब इन तीनों गुणों को ही लो। इन तीनों गुणों से ओ३म् बन गया। इस ओ३म् से ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश बन गए। इनकी भी मियाद है। ये भी आखिर में चले जाते हैं। आप अपने शास्त्र देखो। इन्हें भी आना जाना पड़ता है? पर ये बात कभी आपकी समझ में नहीं आई। क्या इन्हें आना–जाना नहीं पड़ता है? मैं कोई विद्वान तो नहीं हूं पर मैं अपनी सुनी हुई बातें बता रहा हूं कि इन्द्र भी स्वर्ग और वैकुण्ठ के लिए भक्ति करते हैं। तुम्हारे शास्त्र कहते हैं कि चार युगों की एक चौकड़ी होती है। 72 चौकड़ी का एक मनु होता है। 14 मनु का एक कल्प होता है। एक कल्प ब्रह्मा का एक दिन होता है। उस एक दिन में इन्द्र के 14 जन्म होते हैं और तुम स्वर्ग और वैकुण्ठ पर मरते हो। फिर यह भी बताया है कि क ष्ण जी महाराज और अर्जुन जी जा रहे थे। अर्जुन ने कहा–महाराज यह मोरी (नाली) का कीड़ा बहुत दुखी है। क ष्ण जी ने कहा–भाई ! ये मोरी का कीड़ा हजारों बार तो इन्द्र बन चुका है, हजारों बार ब्रह्मा बन चुका और हजारों बार ये मोरी का कीड़ा बन चुका है। इसीलिए कहा जाता है कि ये सभी काल में आ जाते हैं। काल से बच ही नहीं सकते हैं। तुम आगे पहुंचोगे तो पता लगेगा। आप लोग प्रश्न कर सकते हो कि क्या संत काल में

नहीं आते हैं। संत काल में नहीं आते हैं। स्थूल शरीर तो सभी को छोड़ना पड़ता है। जितने भी संत हुए हैं सभी ने छोड़ा है। पर उन्हें शब्द का पता होता है। जितने भी आप ग्रंथ पढ़ते हो, सभी में शब्द का इशारा है। दूसरा कोई शब्द को जानता नहीं है। कबीर को अगर जान जाएं तो कबीर साहब कहते हैं–

शब्द–शब्द सब कोई कहैं, वह तो शब्द विदेह।
जिव्हा पर आवे नहीं, तू निरख परख कर ले।।

जब शब्द खुल जाता है तो कहते हैं–

हिलमिल खेलूं शब्द में, अंतर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पंडित क्या शेख।।

सारी दुनिया के लिए शब्द एक ही है। पर जो शब्द में चले जाते हैं उनको काल नहीं खाता है, कभी भी। उनको भी पांच तत्व का पुतला–यह खोड़ तो छोड़नी ही पड़ती है। पर वे काल से बच जाते हैं। वे किसने बचाए? शब्द ने ही उनको बचा दिया। सो शब्द तो सारी दुनिया का कर्ता है और उस शब्द में पहुंचने का रास्ता एक ही है कि आर्य बनो। तभी पहुंचोगे। वह धर्म तुम्हारा सभी का है। मैंने ज्यादा आर्य–आर्य कह दिया। सभी संतों ने एक धर्म बताया है। मुझे याद है। मैं बाघपुर में था तब कोई बात चली थी। बात इस तरह से थी कि महर्षि दयानन्द जी घूमते–घमते सभी जगह गए। फिर वे अपने गुरू व जानन्द के पास आए। व जानन्द जी ने पूछा कि बताओ, क्या बात है? दयानन्द ने कहा–सब का धर्म तो एक ही है, यह मेरा नहीं है। मैंने तो सुना है ये उनका ही वचन है कि सब का धर्म एक है। परमात्मा भी एक ही है। वह धर्म यही है कि बुरे काम छोड़ो और अच्छे करो और सब बातों को छोड़कर यही दो बातें पकड़नी चाहिए। मैं भी आप लोगों को यही कहता हूं कि सबसे बड़ा धर्म यही है कि अच्छे कर्म करो। अच्छी लाइन पर चलो। नाम क्यों लेते हो? कई आदमी तो केवल इसीलिए नाम

लेते हैं कि उनके पास धन हो जाए। सो धन तो हो जाएगा जरूर ही हो जाएगा। यह मैं गारंटी से कहता हूं। लिखकर देता हूं जो भी तुम भावना लेकर आओगे वह पूरी होगी। पर एक बात और बता देता हूं कि ख्याल को ख्याल काट भी देता है। कभी कोई ऐसा विचार लेकर भी आ जाए। आपने डूम की मिसाल तो सुनी होगी? किसी जमींदार ने कहा—मिरासी ! रात दिन में ढ़ाई सांस ऐसे आते हैं कि वचन पूरा हो जाता है। मिरासी ने कहा—अच्छा! यह बात है क्या? जमींदार ने कहा—हां, यह ठीक है। मिरासी ने कहा—तो फिर ये ढ़ाई सांस ही देखते हैं। उसने एक लठ हाथ में ले लिया और कहना शुरू कर दिया कि तू सोने का हो जा। तू हो जा सोने का। वह ये कहता ही रहा आखिर थक गया। जब वह वक्त आया तो मिरासी ने कहा—अल्लाह का मारा सोने का नहीं तो लोहे का ही हो जा। अब वह लोहे का लठ बन गया। मिरासी ने कहा—ढ़ाई सांस तो ऐसे आते हैं पर हम ही चूक गए। सो आप मेरे पास आते हो। मैं सभी को धड़ाके से कहता हूं कि जो भी भावना लेकर यहां आते हो तुम्हारी वह भावना पूरी होगी। पर तुम तो कोई धन, कोई बिमारी से पीछा छुटाने की कोई मुकदमा जीतने की भावना लेकर आते हो। कोई और दूसरे ऐब छोड़ने की भावना लेकर आते हो। मोक्ष की भावना लेकर तो कोई भी नहीं आता है। क्या कोई यह भावना भी लेकर आया है कि मेरा जीवन सफल हो जाए और मैं नर्कों से बच जाऊं। यदि तुम ऐसी भावना लेकर आते हो और फिर भी तुम्हारा जीवन सफल न हो तो, जाओ मैं संत की औलाद नहीं। मैंने आप लोगों के सामने बुरे से बुरा नेम कर लिया है। तुम्हारा उद्धार जरूर हो जाएगा। पर तुम मेरे चारों नेमों का पालन करते रहना। आर्य धर्म का पालन करना। तुम्हारा उद्धार जरूर ही हो जाएगा।

सतगुरू की ड्यूटी होती है। अगर सतगुरू का अपनाया जीव

नर्क में जाता है तो सतगुरू का मुंह काला होता है। उसको बट्टा लगता है। पर ये पुस्तकें लिख कर तो रख देते हैं। तुम्हारे जैसों को पागल बना देते हैं। सतगुरू नाम किसका है? सतगुरू नाम तो समझ व विवेक का है। सतगुरू दो रोटी नहीं दे सकता है तो मुक्ति कैसे दे देगा? सतगुरू किसका नाम है? यही एक बात थी जो मुझे सारे जीवन ही भगाती फिरी। फिर आखिर एक उजाड़ में, चौड़े मैदान में सतगुरू मिल गया। सतगुरू उसे कहते हैं जिसको किसी भी चीज की लाग न हो। सभी चीजों से आजाद हो। सतगुरू मिल गया तो लेखा निमड़ गया। नानक साहब कहते हैं—

जिसको सतगुरू मिलिया, उसका लेखा निमड़िया।

इसीलिये स्वामी जी महाराज कहते हैं—

सतगुरू खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

आपको इतना बता दिया है कि इन मंजिलों को भजन से तय करके और शब्द धुनि को पकड़ लेना। मैंने सनातन धर्म और आर्य धर्म की बातें बताई हैं। इन बातों को करते—करते ऊपर जाओ। ये तीनों चीजें न्यारी नहीं हैं। ये तो न्यारे—न्यारे टुकड़े बना लिए। जब आर्य धर्म को पकड़ा तो सनातन को नहीं देखा। फिर वे समाजी बन गये और आर्य के ही गीत गाने लगे। सनातन को जिस ने पकड़ा तो उन्होंने उसी के गीत गाने शुरू कर दिए आगे नहीं चले। आगे और भी मंजिलों पर चलना पड़ेगा। आगे चलते तो उन्हें संत मत का पता लग जाता। कोई भागी ही होता है जो पता देता है कि संतमत और भी आगे है। वह तो निखालिस कलाकन्द और मिश्री है। इस जगह पर मिलौनी कोई भी नहीं है। हमारे पास एक प्रेमी ने आकर कहा कि तत्व पांच हैं। वह तत्व की बातें करने लग गया। ये कहने लगे कि भाई ! तत्व तो एक ही है, उसने कहा—क्या तू पागल है? एक कैसे है? उन्होंने काफी बातें की। ये बेचारे हैरान हो गए। उन्होंने इनको आगे कर लिया। उन्होंने यह

भी कहा—तीन चीजें अमर है—जीव, ईश्वर और प्रक ति। मैंने कहा—मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। मैं आप लोगों को सीधी बातें बताऊंगा कि ये तीन चीजें अमर कैसे है। अमर तो एक ही चीज है। गुरू नानक साहब ने कहा है—

आदि सत जुगादि सत, नानक है भी सत होसी भी सत।

वह सत क्या चीज है?

एक ओंकार, सतनाम, कर्ता पुरुष, निर्भय, निर्वैर,
अकाल मूर्त अजूनी सैभं, गुरू प्रसादी जप।

वह सत क्या है? उन्होंने कहा है—

शब्द ही धरती, शब्द ही आकाश शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली स ष्टि शब्द के पाछे। नानक शब्द घटे घट आछे।।

तुम्हारे शास्त्र भी यही बात कहते हैं। सुरत ऊपर चलती है, (जो धार चलती है वह जो चेतन शक्ति है जिसे हम सुरत कहते हैं।) कई भाई इसको चेतन शक्ति कहते हैं। कई रूह कहते हैं। कोई आत्मा कहते हैं। यह उस अनामी धाम से चलती है तो यह ठेके रचती हुई नीचे आती है। जब यह ऊपर से चली तो शब्द में से वायु तत्व निकला। वायु तत्व ने अग्नि प्रगट की। अग्नि से जल प्रगट किया। जल ने प थ्वी प्रगट कर दी। जब यह उल्टी समाएगी तो चोला छुटता है। अब तत्व कितने हैं? ये पांच मोटे तत्व हैं इन्हीं से हम अपना सारा काम करते हैं। प थ्वी तत्व मौटा है। अग्नि तत्व मोटा है। यह भी काम देती है। वायु तत्व, आकाश तत्व ये मोटे—मोटे (स्थूल) हैं। पर इस शरीर के अंदर यही पांच तत्व बारीक भी हैं। ये पांच तत्व—प थ्वी, जल, अग्नि, वायु, शब्द, (आकाश) बताते हैं। जब तुम इन्हीं पांचों को उल्टोगे तो फिर क्या होगा? प थ्वी तत्व उलट कर जल में समा जाएगी। जल तत्व उलट कर अग्नि में समाएगा। दो तत्व खत्म हो गए। प थ्वी और जल तत्व। वे दोनों अग्नी में चले गए। अग्नि तत्व उलट कर वायु

तत्व में चली गई। वायु तत्व उलट कर शब्द में समा जाएगी। इसीलिए नानक साहब ने सारे का सारा, शब्द का ही खेल बताया है। पलटू जी ने भी यही कहा है कि सारा ही खेल शब्द का है।

शब्द विवेकी हंसा बैठ शब्द की डाल।
शब्द ही ओढ़ो, शब्द ही पहरो। शब्द ही शब्द आहार।
निशदिन रहो, शब्द के घर में, शब्द ही गुरू हमार।।

यही सत्यार्थ प्रकाश में है। यह मैंने सुना था। मेरी छोटी उम्र थी। किसी ने प्रश्न किया, शब्द क्या होता है? उन्होंने उत्तर दिया कि हम कानों में उंगली देते हैं तो जो घूं—घूं होता है इसे कहते हैं शब्द। आखिर यह बात भी कहनी ही पड़ी की सारा खेल व सारी स ष्टि ही शब्द से बनी है। और भी ऐसी—ऐसी बातें बता दूंगा। धर्म शिक्षा जो आर्य समाज की पुस्तक है उसमें बड़ा भारी एक रस लिखा है। मैंने ये बातें छोटी उम्र में आर्य समाजियों से सुनी थीं। ये बातें मैं आपको बता देता हूं। ये लोग प्रणायाम करते हैं। पर संत मत का प्राणायाम तो कुदरती ही बन जाता है। जैसे हम तीनों बंद लगाकर बैठते हैं तो मुंह बंद करके नाक से ही सांस आता है। उपदेश के समय ऐसा बताया जाता है। तो कुदरती ही प्राणायाम बन जाता है। इसमें कुछ छोड़ने की भी जरूरत नहीं है। इसमें बहुत ही शांति मिलती है। सुरत उस शब्द को पकड़ लेती है जो प्राणायाम द्वारा प्राण पूरक, कुंभक रेचक करके खींचते हैं। इसमें बिमारियां लग जाती हैं। आज हजारों में एक प्राणायाम करने वाला मिलेगा। आपने भी देखे होंगे। मैंने देखे हैं कोई भी दस मिनट प्राण नहीं खींच सकता है। इस सुरत शब्द के अभ्यास को करने वाले दो—दो, चार—चार, पांच—पांच घंटे अपनी बेहोशी में मस्त पड़े रहते हैं। कोई भी कहने वाला नहीं है कि यह क्या हो रहा है? सो वक्त के अनुसार काम किया जाता है।

मैं आप लोगों को बता रहा था कि वे शब्द में समा गए और

शब्द धार चली, उस शब्द धार का क्या हुआ? वायु, तत्व बना दिया। वायु तत्व ने अग्नि तत्व बना दिया। अग्नि तत्व से जल तत्व बन गया। आप यह भी कहोगे कि अग्नी में पानी कहां से आया? सो अग्नि में पानी तो होता है। अग्नि से जल तत्व बना और जल तत्व ने फिर प थ्वी बना ली। ऐसा आपके शास्त्र कहते हैं, मैं नहीं कहता हूं। सो एक शब्द ही बचता है। उस शब्द से धार जो चली इसी से सब बन गया। अब मैं इसे फिर बताऊंगा। जैसे हमारी सुरत चलती है, सुरत से ही सब कुछ बन गया। सुरत ने ही चेतन किया। पच्चीस प्रक तियां बना दी। तीन गुण बना दिए। चार अन्तःकरण बना दिए। 10 इन्द्रियां बना दी। पांच तत्व बना दिए। जब वह सुरत चली जाती है तब सारे बिखर जाते हैं। इसे तो सभी समझते हैं। सो मालिक तो सुरत ही है। सुरत कहो या इसे जीवात्मा कहो अथवा चेतन शक्ति कहो। चेतन शक्ति ने सभी को चेतन बना रखा है। जब वह चली जाती है तो दसों प्राण खत्म हो जाते हैं। सभी उसी से बने थे। वे उसी में समा जाते हैं। आप कहोगे कि यह तो बहुत बखेड़ा है। हां—पर ये सब ही झूठे हैं। एक ही चेतन शक्ति जो सुरत है वह सच्ची है और सभी उससे बने हैं। मैं बाहर की मिसाल देता हूं। जैसे भाखड़ा डैम से बिजली आती है। इस बिजली से बड़े—बड़े कारखाने चलते हैं। छोटे बल्ब लगे हुए हैं। इनके सभी के न्यारे—न्यारे नाम हैं। पर उन सभी में है तो बिजली ही। जब वह बिजली मुड़ कर वापिस चली जाती है तो उसके नाम ही खत्म हो जाते हैं और सभी झूठे पड़ जाते हैं। सो अभ्यास करके सुरत अपने धर्म का पालन करते—करते, अपना साधन करते—करते वह प्रकाश में चली जाती है। प्रकाश को देखते—देखते फिर यह शब्द की डोरी को पकड़ लेती है। शब्द की डोरी को पकड़कर अपने मालिक में जा मिलती है। इसको बड़ी भारी शांति आ जाती है। जिस स्थान से आई थी, वहीं चली

जाती है। इसे ही कबीर साहब ने मंजिलें—मंजिले पहुंचना कहा है। यह शब्द है कबीर साहब का कि मंजिलें—मंजिलें जा पहुंचे। मैंने थोड़ी बातों पर प्रकाश डाला है। मानो तो तुम्हारी मर्जी और न मानों तो तुम्हारी मर्जी।

सबसे बड़ा तो आर्य धर्म है। कभी राधास्वामी मत वाले मुझसे आकर लड़ें कि आपने आर्य धर्म की बड़ाई कर दी। मैंने सभी धर्मों का धर्म आर्य बताया है। अब राधास्वामी मत वाले भी यदि शराब मीट, अंडों का प्रयोग करेंगे तो उनको श्रेष्ठ कौन कहेगा? उनको तो गिरे हुए ही कहेंगे। आर्य तो श्रेष्ठ को कहते हैं। जो श्रेष्ठ बन जाएगा तो वह भक्ति भी कर लेगा। सो यह धर्म सब का साझला है। जितने भी मजहब संसार में चले हैं सभी ने यह धर्म अपनाया है। आगे जाकर बिखर जाते हैं और सब के सब इन्द्रियों के गुलाम बन जाते हैं। कोई जीभ का गुलाम, कोई आंखों का गुलाम कोई इन्द्रियों का गुलाम, कोई कानों का गुलाम कोई पेट का गुलाम। फिर ढोलकी बजाना शुरू कर देते हैं और अपना पेट भरने के लिए टुकड़े बना लेते हैं। शेर वही होता है जो अपना कमा कर खाता है और दुनिया को मुफ्त में उपदेश सुनाता है। क्या परमात्मा अपनी हवा के तुम से पैसे मांगता है? क्या वह अपनी धूप के पैसे मांगता है? क्या वर्षा के पैसे मांगता है? इसी तरह से जो संत सतगुरू आते हैं वे निष्पक्ष होकर, परमात्मा की तरह उपदेश सुना कर चले जाते हैं। वे संसार का नहीं अपना ही कमाकर खाते हैं और डंका बजा कर चले जाते हैं। कबीर साहब की, नानक जी की साखें काम देती हैं। कबीर साहब ने सारे जीवन तानी तनी। नानक साहब ने करतार पुर में पशु चराए, खेती की। गरीबदास ने पशु चराए। नामदेव ने कपड़े ठेके। सैन भक्त ने नाई का काम किया। रैदास जी ने जूतियां बनाईं। लखमा माली ने कूंआ चलाया और "बारिया बोल्या मेरे भाई" आदि गीत गाए। उसके पास कोई राजा

चला गया। लखमा उस वक्त प्यौंद लगा रहा था। राजा ने पूछा—लखमा जी ! परमात्मा को कैसे पाया जाता है? लखमा ने कहा कि परमात्मा का क्या पावना, इधर से पाड़ना उधर को लावना। इसी तरह राजस्थान में पुहली भक्तिनी हुई है। कहते हैं बीकानेर का राजा हर की पौड़ियों पर नहा रहा था। इतनी देर में किसी ने पूछ लिया कि यह राजा कौन सा है? किसी ने उसको बताया कि—ये उसी बीकानेर का राजा है जहां की पुहली भक्तिनी है। ये पुहली वाली बीकानेर का राजा है। राजा ने वजीर से पूछा—ये पुहली भक्तिनी बीकानेर में कौन है? वजीर ने कहा—यह एक धाणकी है। राजा ने कहा—यहां मेरा तो कोई नाम भी नहीं जानता है। उस के नाम को तो सब ही जानते हैं। क्या वह ऐसी भक्तिनी है? ये सारे बाबा जी उसका ही नाम ले रहे हैं। वजीर ने बताया कि वह तो बहुत अच्छी है। राजा ने कहा—आपने आज तक तो उसके दर्शन नहीं करवाए। वजीर ने कहा—आज दर्शन करवा देंगे। वजीर राजा को उस पुहली के पास ले गया।

ऐसे भक्तों की मालिक भी टेक रखता है। उनके पास जवाब भी हाजिर होता है। उसे देखकर राजा ने पूछा—तेरा ही नाम पुहली है? पुहली ने कहा—हां !

जब तक सांस शरीर में, तब तक नाम अनेक।
घट फूटा सागर मिले, पूर्ण पुहली एक।।

राजा ने पूछा—यह क्या कह दिया भई? वजीर ने कहा—इसने तो बहुत बड़ी बात कह दी है। राजा ने कहा—पुहली ! हमें भी बता दे कि परमात्मा के दर्शन किस तरह हों? पुहली ने कहा—राजन ! परमात्मा के दर्शन तो मामूली बात है। परमात्मा के दर्शन तो हुए ही बैठे हैं। राजा ने पूछा—किस तरह? पुहली ने गोबर उठाया और छापने लग गई और कहा—न्यूं तै तोड़ा न्यूं नै लावना। उसने तो यह बात कह दी पर राजा को समझ में नहीं आई। तब वह बोला

कि ये है जाति की धाणकी ही। इसे क्या पता? इसने क्या बताया है। वजीर ने कहा—इसने तो सब कुछ बता दिया है। यह कहती है कि अगर तू परमात्मा से ही मिलना चाहता है तो अपने राज दरबार की तरफ से विचार तोड़ ले। पुहली ने अपना काम तो अब भी नहीं छोड़ा। गोबर को तो वह उसी तरह थापती रही। साथ ही उसने राजा को सत्संग भी दे दिया। सो जो महात्मा अपना काम ही छोड़ देते हैं तो उन्हें महात्मा कौन कहेगा?

घर में रहो, कमा कर खाओ,
पर धन पर तिरिया से नेह न लगाओ।

यह हजूर महाराज राय सागिराम की वाणी है। तुलसी साहब कहते हैं—

पर तिरिया को माता समझो, पर धन धूल समान।
इतने में हर न मिले, तो तुलसी दास जमान।।

सन्तों ने तो कमा कर ही खाया। सब की बातें बता दी हैं। राजा वापिस आया। उसने पुहली से कहा—कल हमारे रनवास में आना। राणियों को कुछ शिक्षा देना। पुहली ने कहा—अच्छा महाराज आ जाऊंगी! राजा उसे कहकर चला गया। राजा ने आकर अपने रनवास में कह दिया कि कल पुहली आएगी। सेवा बाड़ी अच्छी करना और ठीक रखना। रानियों ने कहा—अच्छा जी। अब रानियों को पता ही नहीं था कि पुहली तो धाणकी है। फटे घाघरे वाली थी। उन्होंने सोचा कि कोई रानी महारानी आएगी। सभी रानियां श्रंगार करके बैठ गई। कहते हैं कि उन्होंने तो बाल—बाल में मोती पिरो लिए। सो वे अपने सोलह श्रंगार करके बैठ गई। अब पुहली आई। उसकी फटी घाघरी थी और हाथ में एक डंडी थी। एक तरफ से उसने घाघरी को टांग भी रखा था। रानियों ने पूछा—तू कौन है? पुहली ने कहा—मुझे तो पुहली कहते हैं। राजा ने मुझे बुलाया है और तुम्हें मैं दर्शन देने के

लिए आई हूं। उन्होंने कहा—क्या तू ही पुहली है? उसने कहा—हां, मैं ही पुहली हूं। अब तो सारी रानी हथेली बजाकर हंस पड़ी। जब वे हंसी तो पुहली चल पड़ी। उसने चलते—चलते कहा—

गहनो बाधो तन की शोभा, बिनस जाये ज्यों काचो भाण्डो।
अब के जन्म में ओढ़ पहन लो, अगले में कुत्ती बनोगी रांडो।।

यह बात कहकर पुहली चल पड़ी। इतनी देर में राजा आ गया। उसने पूछा—अभी पुहली आई थी। रानियों ने कहा—वह कैसी पुहली थी? वह तो हमें गाली देकर चली गई। राजा ने पूछा—उसने क्या कह दिया? रानियों ने सारी बात बता दी। राजा ने कहा—उसको बुला लो और उसके पांव पकड़ लो। तुम तो डूब गई हो। तब उसको वापिस बुलाया और उससे माफी मांगी। सो संतों ने अपना काम नहीं छोड़ा। मैं किस—किस की मिसाल दूं? काम छोड़ दिया तो कमजोर ही है। गिरा हुआ है। काम नहीं छोड़ना चाहिए। काम और राम को मत छोड़ो। करते रहो।

जैसा खा अन्न, वैसा होज्या मन।

जो घटिया अन्न खाते हैं, उनके विचार गंदे हो जाते हैं। इन महात्माओं के विचार इसीलिए पवित्र रहते हैं कि ये जीवन भर कमाकर खाते हैं।

सो प्रेमियो ! मैंने सारा सत्संग बता दिया। मानो तो तुम्हारी मर्जी और न मानो तो तुम्हारी मर्जी। अब और क्या बताऊं? यह करणी का मार्ग है, बातों का मार्ग नहीं है। एक शब्द और सुना दूंगा।

नमो—नमो सतपुरुष को नमस्कार गुरू कीन्ह।
सुर नर मुनिजन साधुवां, संता सर्वस दीन्ह।।
गुरू की महिमा क्या कहूं, साख भरैं सैं वेद।
बिन सतगुरू नहीं पाइए, अगम पन्थ का भेद।।
गुरू—गुरू में भेद है, गुरू—गुरू में भाव।

सोए सतगुरू बंदिए, शब्द बतावे दाव।।
शब्द ही मारे मर गए, शब्द ही तजिया राज।
जिन ये शब्द पिछाणिया, सरे उन्हीं के काज।।

गगन में आवाज हो रही झीनी—झीनी जी।
सुनता है कोए ब्रह्म ज्ञानी। रे गगन में....।
पहले आया बंदे नाद बिंद से, पीछे जमाया तेरा पानी जी।
पूरण हारा पूर रहा रे, अलख पुरूष निर्वाणी।।१।।
एक बीज सकल घट बोया, क्रिया न्यारी—न्यारी जी।
दाता मेरे ने बाग लगाया, खूब खिली फुलवाड़ी।।२।।
गगन मंडल में गैया रे ब्याई, धरती में दही जिमाना जी।
मक्खन—मक्खन साधुजन लेगे, छाछ जगत भरमानी।।३।।
ओहम् सोहम् बाजे रे बाजैं त्रिकुटी ध्यान समाना जी।
ईड़ा पिंगला सुखमन साधो, बंकनाल उलटानी।।४।।
जग में आया बंदे क्या पटा लिखवाया, त ष्णा नाहिं बुझानी जी।
अम त छोड़ विषय रस पीवै, उलटी फांस फंसानी।।५।।
कहे कबीर सुनो भई साधो, अगम निगम की बाणी जी।
अपना शीश नजर भर देखो, यही है अमर निशानी।।६।।

यह कबीर साहब जी की वाणी है। पहले जो बातें चली थी वे धर्म की बातें थी कि आर्य धर्म सब किसी का नाम है। कबीर साहब ने कहा है कि अगर उस घर पहुंचना हो, और वह झीनी—झीनी धुनि सुननी हो तो क्या करना है? पहले यह विचार करो कि हम नाद बिंद से आए थे और पीछे जिमाया पानी। कितनी बड़ी बात है कि पहले हम नाद बिंद यानि शब्द से आए, पीछे पानी जिमाया। बाद तेरा पानी जमा लिया और पूर्णहारा अलख पुरुष निर्वाणी पूर रहा है। आप लोगों को पहले भी ये बातें बताई थी अब भी बताता हूं कि जब हम उस धर्म को पकड़कर चलते हैं काम करते हैं तब

हमें किसका सहारा लेकर चलना है? धर्म के लिए चलना है जैसे हम खेत में रखवाली करते हैं तो हमारे हाथ में 'टाट—गोफिया' (जानवर उड़ाने के लिए बजाने का रस्सा) भी होता है। जैसे हम पशु चराते हैं तो हाथ में लठ भी होता है। इसी तरह जब हम धर्म पर चलते हैं, आर्य भाई कहते हैं कि गायत्री का जाप करना है। यह गायत्री याद होनी चाहिए। सिक्खों में उस धर्म को पकड़कर चलते हैं तो एक उनका मूल मंत्र होता है वह होना चाहिए। वह है—

एक ओंकार, कर्ता पुरुष निभर्य,
निर्वैर अकालमूर्त अजूनी सै भं, गुरू प्रसादी जप।

इसे पकड़ कर चलना पड़ता है। तो तुम संत मत वाले हो। कई कहते हैं कि पांच नाम पकड़कर चलो। पर चार नाम तो काल के हैं। नाम तो वही है जो सारी दुनिया की जान है। मैं सीधी बातें कहता हूं। क्यों कहता हूं ये सीधी बातें? क्योंकि मेरे पास बाबा जैमल सिंह का लेख है। उन्होंने कहा—पांच नाम भी वर्णात्मक हैं। तो मैं भी आपको यही कहता हूं कि जो जुबान से बोले जाते हैं सारे ही वर्णात्मक हैं। धुनात्मक को जुबान से नहीं बोला जाता है। उसकी तो धुनि होती है। आर्य जो बनते हैं वे गायत्री का जाप करते हैं। तो तुम भी आज आर्य बने हो तो तुम्हें क्या बताया है? तुम्हें राधास्वामी नाम का जाप बताया है। बताया तो सही है कि धर्म की लाठी लेकर चलो तो यह सहारा लेकर चलने के लिए है। अगर तुम दो चार घंटे या आध घंटा दोनों वक्त ध्यान नहीं करोगे तो तुम उस आर्य धर्म को छोड़ गए। संतमत को भी। फिर तो आपने बट्टा ही लगा दिया। फिर तो तुम गिर जाओगे। उभर नहीं सकते हो। अगर दो चार घंटे आध घंटा दोनों टाइम हाजरी बजाओगे तो तिर जाओगे। यही बात है। जिनको आर्य कहते हैं वे गायत्री का जाप करते हैं। पर वे गायत्री भी दो हैं। नाम भी दो बताए हैं संतमत वालों को। एक वर्णात्मक है। दूसरा धुनात्मक है।

पर वर्णात्मक नाम जपते हुए इन नियमों का पालन करोगे तो धुनात्मक तक पहुंच जाओगे। धुनात्मक में पहुंच गए तो बेड़ा पार है। यही बात उनकी है। गायत्री का जाप करते हैं और उनके आर्य धर्म के वे पूरे हैं तो गायत्री का जाप करते—करते धुनात्मक गायत्री में पहुंच जाएंगे। धुनात्मक गायत्री को वे जानते तो होंगे पर उसका करने वाला तो बिरला ही मिलेगा। ऊपर से जो जपी जाती है जैसे राधास्वामी मत वाले, कबीर पंथी जो उनका मंत्र है। आदिनाम, अजर नाम अदली अकास नाम, पाताल शब्द सिंध नाम तांहे नाम से जीव का काम खुली कुंजी, खुले कपाट पांजी निरखी सुरत के घाट। भरम भूत का बांधा गोला, याही कारन धर्म दास बोला—कहे कबीर वचन प्रमाण, याहे शब्द से हंसा लोक समानि। सतनाम। सतनाम।

यह तो एक बड़ी महारानी सी हो जाती है। यही राधास्वामी मत वाले कहते हैं कि राधास्वामी—राधास्वामी। अगर उसका ध्येय नहीं समझा और ध्यान नहीं किया तो उस लाइन पर नहीं चले। वे ऐब नहीं छोड़े तो यह नाम तो तुम्हें राधास्वामी धाम में नहीं ले जाएगा। यही बात मैं उन गायत्री वालों को कहता हूं। अगर वे दूसरों की निंदा करते हैं, खोटे कर्म करते हैं, हराम का खाते हैं तो गायत्री रात और दिन पढ़ो, वह गायत्री उनको कोई भी फल नहीं देगी। चाहे वे हजारों माला फेरते रहें। ऐसे कोई भी सिद्ध नहीं हुआ और न होगा। इन नेमों का पालन करो। जो आर्य धर्म है उस नेम का पालन करके चलो। वही गायत्री ओ३म् भूर्भवः स्वः तत्वसवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् उनको सतलोक में ले जाएगी। वह गायत्री बदल जाएगी। जब अंतर में जाओगे तो फिर वही गायत्री— ओ३म् भू, ओ३म् भवः, ओ३म् स्वः, ओ३म् महः, ओ३म् जन, ओ३म् तप, ओ३म् सत। वह गायत्री कहां ले गई? वह सतलोक में ले गई। इसीलिए दो चीजें

होती है। बाहर के विचार पवित्र हैं तो बाहर की गायत्री जैसा मैंने ऊपर बताया है इन मंजिलों पर ले जाएगी। ये गायत्री सभी के लिए है जैसे बाहर के विचार पवित्र होंगे। हम मंदिरों में जाकर पांचाम त लेते हैं। हमारे विचार जब गिरे हुए हैं तो वह पांचाम त किस तरह उतारेगा, अगर हमारे विचार पवित्र हैं तो पांचाम त में पांच चीजें मिली हैं। वह ले लो। उससे हमारे दिल में शांति आएगी कि हां, हमें ठीक शांति मिल गई है। क्योंकि कबीर साहब ने कहा है—

गुरू को मानस जानते, चरणाम त को पान।
से नर नर्कहि जाएंगे, जन्म—जन्म होहिं श्वान।
गुरू को मानस जानते, ते नर कहिए अंध।
होहिं दुखी संसार में, आगे जम का फंद।।

पर मैं सतगुरू किसको कहता हूं—ज्ञान को, शब्द को, विवेक को। सच्चाई को कहता हूं। जब लोगों को धुर का पता ही नहीं है तो बेचारे कहां जाएंगे? वे गिर जाते हैं। सो मंदिरों में गए। पांचाम त ले लिया। उसका उन्हें पता नहीं है यह क्या है। अगर तुम्हें उस धुनि का पता है तो सुमरन करो वह पांचाम त पांचों धुनियों में से ले जाएगा। जैसे हम पांच नाम का सुमरन करते हैं यही हमारे सनातनियों का पांचाम त है। ये पांच चीजें मिलाकर देने लग गए और उसको इन्होंने पांचाम त कह दिया। सिक्खों ने पंच प्यारे कह दिए। जब वे अम त छकते हैं तब वे पांच वाणी बोलते हैं। आनन्द साहब की सुखमनी साहब की, जपुजी साहब की। दो एक और हैं। इस तरह से कुछ बोलते हैं। पांच धुनियों को छोड़कर पांच वाणी ले ली। नानक साहब ने भी यही कहा है—

घर में घर दिखलाय दे, सो सतगुरू पुरुष सुजान।
पांच शब्द धुनकारें धुन, जहैं बाजें शब्द निशान।।

पर उन्होंने यह नहीं कहा कि इनका जाप किया करो। यह कहा है कि ये पांच धुनि हैं इन्हें तय करके आगे चलो। सतलोक

में पहुंच जाओगे तब निचली धुनि को याद करने आओगे क्या? फिर तो जैसे गरीबदास जी कहते हैं—कमलों पर ही आ गए। फिर नीचे गिर गए। वे धुनि नीचे की नीचे रह जाती हैं। आप ऊपर चले जाते हो और उस धुनि में चले जाते हैं। सतखण्ड से आगे आप ही शब्द खींच लेता है। जैसे अजगर अपने शिकार को खींच लेता है इसी तरह से शब्द सुरत को अपनी तरफ खींच लेता है पर ये जो पांचाम त की बातें बताई हैं। इन्होंने कह दिया— चरणाम त। ये चरणाम त अंतर की पांच धुनियां थीं। वे नाम देते हैं और अम त छकते हैं। तो क्या अम त पीने के मरा करते हैं? पर अम त छक कर भी खोटे कर्म करते हैं। अम त उन्हें नहीं मिला। अम त तो सतखण्ड में है। जहां पाचंवी धुनि होती है वहां। ये सब छुट जाते हैं। इसको मुसलमान अपनी वाणी में नासुत, मलकुत, जबरूत, लाहुत, हुत कहते हैं। सिक्खों में भी बता दिया। सब की बता दी हैं। ये अन्तर की ध्वनियां तो सभी को माननी पड़ती हैं। पर जाप किसी ने नहीं किया। स्वामी जी ने कहा है कि पांच नाम का सुमरन करो, सुमरन करो जाप करने के लिए नहीं कहा। आप का भी दिमाग है जाप न्यारा होता है, सुमरन न्यारा है। सोचो! मैं क्या कहता हूं? सो मैंने सभी द ढ़ बातें सीधी—सीधी बताई, सतखण्ड से नीचे तंत्र हैं। छठे चक्कर से नीचे जंत्र है। उससे भी नीचे मंत्र है। तंत्र वाला भी मोक्ष में नहीं जाएगा। आपने तांत्रिकों को देखा है। दूसरों को काबू करते हैं। वहां तंत्र, फिर जंत्र और आगे मंत्र। इन तीनों को छोड़कर आगे नाम है। स्वामी जी कहते हैं—

दुनिया ढूंढे त्रिलोकी माहिं। नाम रहे चौथे लोक माहिं।।

अगर कोई दादू, पलटू, कबीर जितने भी संत हुए हैं इन का अनुयायी भी आकर यह कह देगा सतलोक से आगे जंत्र—मंत्र तंत्र है। नहीं। वहां तो एक नाम है। सो नाम की महिमा सबने ही गाई है। नाम सतलोक से नीचे नहीं है। नाम सतलोक में जाकर मिलता

है मोक्ष के लिए। इससे नीचे—नीचे नाम मियादी हैं। किसी का एक कल्प, किसी का दो कल्प, किसी का चार कल्प किसी का टाइम कितना है और किसी का कितना है। यह तो सभी बताते हैं। ऋषि दयानन्द ने भी बताए हैं। ऋषि दयानन्द भी सच्चाई कहने के लिए आए थे। उन्होंने जो कहना था कह गए। वे एक ही थे। कबीर साहब भी वही थे। सारी दुनिया में डंका बजा दिया। नानक साहब भी वही थे। आज भी कितनी हलचल मची है। उनकी वाणियों की आरती उतरती है। स्वामी जी महाराज आगरा से बाहर नहीं गए। यह क्या था? और तो भागते फिरते हैं। उनका सारी दुनिया में नाम फैल गया। नाम ऐसा ही समझो, जैसे एक तो हाथ में लेकर गोली को मारता है। वह गोली मार नहीं करती है। जो लोग कमाई नहीं करते और अंतर में अभ्यास नहीं करते, ऊपर से बातें करते हैं, उनकी बोली तो ऐसी ही है जैसे हाथ में लेकर गोली मारना। जो अभ्यास करते हैं, करणी करते हैं, छठे चक्कर से ऊपर अपनी सुरत को ले जाते हैं उनकी बातें ऐसी हैं जैसे नाल में गोली भर कर दाग दी है। वह कइयों के बीच में जा सकती है। उनकी वाणी प्रभावशाली होती है। सो संत की वाणी द ढ़, मजबूत होनी चाहिए। पर संत भी सच्चा पूरा होना चाहिए, पूरा धनी हो। अगर दूसरों की झूठी रोटी खाता हो और दूसरों के झूठे मुंह चूमता हो तो उसको आप कभी भी संत न कहना। संत की रहनी मजबूत होनी चाहिए।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जून/जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	गाधली	24 मई-30 मई
1.	झरझीला	31 मई-6 जून
2	नजफगढ़	7 जून-13 जून
3	हरसाना	14 जून-20 जून
4	सिचावली	21 जून-27 जून

जीवन-दर्शन

जीवन में पाँच प्रकार के व्यक्तियों का संग नहीं करना चाहिए–

1. **जो झूठ बोलता है और अहंकारी है।**
2. **दूसरा नादान, जो तुम्हारे फायदे के समय तुम्हारा नुक्सान करवा दे।**
3. **तीसरा कंजूस, मुनासिब वक्त पर तुमको नेक काम में खर्च न करने दे।**
4. **चौथा औछा और कमीना आदमी, जो वक्त जरूरत पर तुम्हारे काम न आये।**
5. **पाँचवा धोखेबाज, अपना लालच देखकर, तुमको नुक्सान पहुँचाये।**

बुराई एक मल है

महर्षि शिवव्रत लाल जी

जो व्यक्ति किसी और के साथ बुराई करता है, वह गुप्त रीति से उसकी बुराई को छीन-छीन कर अपने अन्दर भरता जाता है। बुराई मल है। मल सर्वदा मल ही उत्पन्न करता है। इसी तरह तुम किसी आदमी का बुरा सोचते हो तो, तुम उसकी बुराई को छीन लेते हो और उसकी बुराई के भण्डार बनकर तरह-तरह की बुराइयाँ करने लगते हो। उत्पत्ति का क्रम प्रक ति में एक ही ढंग पर नहीं चलता इसके अनन्त ढंग है। कहीं मैथुन या भोग से उत्पत्ति होती है, कहीं ख्याल लेकर उत्पत्ति होती है और कहीं मादा नर का मल खाकर उत्पत्ति होती है।

मैथुन से उत्पत्ति का सिद्धान्त तुम जानते हो। मल खाकर उत्पत्ति के नियम से थोड़े से लोग परिचित है। मोरनी मोर के साथ जोड़ा नहीं खाती। कम से कम यह बात तो प्रसिद्ध है कि जब मोरनी का बच्चा पैदा करने का समय आता है तो नर की आँख की कीचड़ या मैल को चोंच से लेकर निगल जाती है। तब उसी से अपने पेट का अण्डा निकालती है और मोरों की उत्पत्ति का क्रम चलता रहता है। ख्याल से भी ख्याल की उत्पत्ति होती है, तुमने किसी से अच्छी बात सुनी, उसको मन में रख लिया। अब उसी से अच्छे ख्याल की सन्तान चलने लगी। ठीक इसी तरह से बुरे आदमी पीठ पीछे दूसरों की निन्दा करने, दूसरों को हानि पहुँचाने और उनकी बुराई करते रहने से, उन दूसरे आदमियों की बुराई के मल को खाते हैं और तरह-तरह की बुराई के पैदा करने वाले होते हैं।

दूसरों की बुराई देखने वाला, दूसरों की बुराई बखानने वाला औद दूसरों की बुराई सोचने वाला मल खाने वाला है और सूअर की तरह औरों के मल को खा-खा कर अपने आपको मलीन और घ णा का पात्र बनाते जाता है। आप दुखी होते हैं और दुख की औलाद को दुनिया में पैदा कर जाते हैं।

अनमोल वचन

- सन्त हर धर्म और जाति के साथ प्यार करते हैं। सन्तों के सत्संग में अच्छे, बुरे, चोर, डाकू, ठग और व्यभिचारी हर प्रकार के पुरुष आते हैं। सन्त उनसे प्रेम करते हैं। — *कबीर साहिब*
- सन्त आत्मा को शब्द से जोड़ कर परमात्मा से मिलाप का मार्ग बताते हैं, परन्तु लोग उनकी ऊँची शिक्षा को जात-पात के ओछे स्तर पर ले आते हैं। — *सन्त तुलसी साहिब*
- समाज सन्तमत की प्रथम शिक्षा ग्रहण करे तो इसमें आई सारी बेचैनी समाप्त हो जाये और पूर्ण शान्ति स्थापित हो जाये। सन्तमत की प्रथम शिक्षा है - मनुष्य हक हलाल की कमाई का पवित्र भोजन करें।

— *संत हुजूर कंवर सिंह जी महाराज*

ज्ञान-सार

- *दूसरों के दोष देखने से न हमारा भला होता है, न दूसरों का।*
- *यदि आप चाहते हैं कि कोई भी मुझे बुरा न समझें तो दूसरे को बुरा समझने का आपको कोई अधिकार नहीं हैं।*
- *मनुष्य का अन्तःकरण जितना दोषी (मलिन) होता है, उतना ही उसको दूसरों में दोष दीखता है।*
- *धन किसी को भी अपना गुलाम नहीं बनाता। मनुष्य खुद ही धन का गुलाम बनकर अपना पतन कर लेता है।*

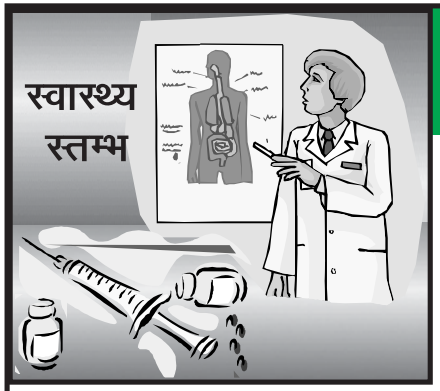

श्वेत प्रदर (LEUCORRHEA)

श्वेत प्रदर के सम्बन्ध में विशेष जानकारी :-

श्वेत प्रदर (सफेद पानी, व्हाइट डिस्चार्ज या लिकोरिया) महिलाओं की एक विशेष बीमारी है, जिसमें कभी सफेद तो कभी पीलापन, कभी चिकना, कभी गाढ़ा, कभी निर्गन्ध व बदबूदार रिसने वाला एक प्रकार का कई दिनों एव महीनों तक जारी रहता है। महिलाएँ धीरे-धीरे कमजोर और निढाल हो जाती हैं और भरी जवानी में बूढ़ी सी नजर आने लगती हैं।

रोग उत्पत्ति के कारण :-

अत्यधिक आलस्य, हर वक्त लेटे रहने की आदत, उत्तेजक पदार्थों का सेवन जैसे माँस, मछली, अण्डा, शराब, चाय, काफी, तेल, मिर्च, कामोत्तेजक और अश्लील साहित्य, सिनेमा, दूरदर्शन तथा मनोरंजन के साधनों में रूचि, अत्यधिक सहवास, मासिक धर्म की अनियमितता, छोटी उम्र में गर्भ ठहर जाना या बार-बार गर्भपात होना।

लक्षण :-

रोगिणी के हाथ-पैर, पिंडलियों, घुटनों और पैर की हड्डियों में दर्द रहना, शरीर टूटना, पेडू में भारीपन, कमर दर्द, सिर दर्द, चक्कर आना, हाथ-पैरों में से आग निकलती मालूम होना, योनि का

गीला रहना, योनि प्रदेश में खुजली या जलन होना, चेहरे का पीला पड़ना, किसी काम में मन न लगना, सहवास में अनिच्छा आदि।

श्वेत प्रदर में पथ्य :-

सभी हरी शाक-सब्जियाँ, फल जैसे केले, पके अंगूर, सेब, नारंगी, अनार, आंवला, पपीता, चीकू, मौसमी आदि, पुराने गेहूँ की रोटी, चावल का धोवन तथा मांड, दलिया, दूध, घी, मक्खन, छाछ, अरहर और मूंग की दाल अंकुरित मूंग-मोठ स्वच्छता पालन, सत्संग और स्वाध्याय।

अपथ्य :-

तेज मिर्च-मसालेदार पदार्थ, तेल में तले पदार्थ, गुड़, खटाई, अरबी, बैंगन, अधिक सहवास, रात में जागना, अश्लील वातावरण, शराब, तम्बाकू, चाय, काफी आदि।

पुनरावृत्ति से बचने के उपाय :-

यथा शक्ति पर्याप्त शारीरिक श्रम करें। दिन में सोना बन्द करें। आसन-प्राणायाम, व्यायाम या प्रातः खुली हवा में भ्रमण करें। क्रोध, चिन्ता, शौक, भय से दूर रहे। सदैव प्रफुल्लित रहें। खटाई, सफेद चीनी, लाल मिर्च, अचार-मुरब्बा के अधिक प्रयोग से बचें। अधिक सहवास, पुरुष-सम्पर्क और अभद्र हंसी-मजाक से बचें। कामोत्तेजक बातों या द श्यों से युक्त सिनेमा, टी.वी. संगीत गलत संगति से बचें। कुछ काल तक पथ्य-निषेध का पालन करते हुए संयमपूर्वक एंव ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन बिताना चाहिए।

सत्संग सार
जीन्द
14-3-2004

राधास्वामी ! राधास्वामी दयाल की दया ! राधास्वामी सहाय ! राधास्वामी !

जीवों को सन्तों की अब यह बात तो समझ में आने लगी है कि कलियुग में जीव का कल्याण नाम से होगा। परन्तु अभी भी बहुत से लोग सतगुरु परम्परा की निन्दा करते हैं। वे संसारी चीजों के लिए गुरु बनाने की बात को ठीक समझते हैं, परन्तु रूहानी गुरु के रूप में मनुष्य द्वारा किसी मनुष्य की पूजा करने को वे गलत बताते हैं। ऐसे लोग सन्त मत को नहीं समझते हैं। वे देह रूप में इनसान को ही गुरु मानते हैं। वे यह नहीं समझते हैं कि गुरु नाम ज्ञान का है और सतगुरु में स्वयं परमात्मा या ज्ञान की धार प्रकट होती है। देह रूप में गुरु को ही माध्यम मानकर उस कुल मालिक को प्राप्त किया जा सकता है। परम पिता परमात्मा को प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग भी नहीं है। देह रूप में सतगुरु को अन्तर में प्रकट करके यदि जीव अपने अन्तर के गन्दे विचारों को उच्च–विचारों में बदल सकता है तो फिर संसार में उस पूर्ण पुरुष से अच्छा और तो कोई भी नहीं हो सकता है। ऐसे महापुरुष की देह रूप में जितनी भी सेवा, पूजा या आराधना की जाए तो वह थोड़ी ही है।

यदि अपने सतगुरु की आज्ञा की जीव थोड़ी बहुत भी पालना कर ले तो वह धन्य–2 हो जाता है। बड़े महाराज जी ने लाखों, करोड़ों जीवों को कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लगा दिया। इसीलिए उनकी आज संसार के विभिन्न देशों में पूजा हो रही है। वैसे लोग ठीक मार्ग पर चलते–२ विचलित होकर भी गिर जाते हैं क्योंकि इस म त्यु लोक में काल महाराज का साम्राज्य है। इसीलिए ही सन्त कहते हैं कि–

पहुँचेंगे तब कहेंगे, तज कर जग का कीच।
अभी डींग क्यों मारिए, बेड़ी पायन बीच।।

जब तक मनुष्य सुखी रहता है और उसमें शारीरिक शक्ति रहती है, तब तक वह नास्तिक बना रहता है। वह भगवान, गुरु, सतगुरु, माता–पिता

तक को भी नहीं मानता है। जब बुढ़ापा आ जाता है और वह कुछ भी करने के लायक नहीं रहता है, तब वह पछताता है कि जो कुछ उसको काम करना चाहिए था, वह उसने नहीं किया। तब वह सोचता है कि–

आए थे किस काम को, कर बैठे क्या बात।
क्या मुख ले मिलिए राम से, खाली दोनों हाथ।।

काल महाराज का तो चक्र ही ऐसा है। वह पूर्ण पुरुष से नाम लेने वालों को भी गिरा लेता है। वे यह समझते भी हैं कि वे अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार चल नहीं सके हैं, इसीलिए ही उनका जहाँ जगत दुखों से भर गया है, वहीं उनका अगत भी बिगड़ रहा है, परन्तु फिर भी वे लोग गुरु के बताए सन्मार्ग पर नहीं लौट पाते हैं। फिर तो उनकी यही अवस्था होती हैं कि–

गुरु वचन माने नहीं, गुरु ही लगावें दोष।
दुखी होएँ संसार में, मरे न पावे मोक्ष।।

सन्तों की शिक्षा बहुत ही सीधी सादी है। वे स्पष्ट कहते हैं कि यदि

ात को सुधारना चाहता है तो उसको अपने विचार
चार किसी मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या अन्य धार्मिक
ने, नदियों में नहाने या दूसरे कर्मकाण्डों से कभी भी
। जीव के विचार पवित्र तभी होंगे जब वह किसी पूर्ण
ापको समर्पित कर देगा और उसके बताए अनुसार अपने अन्तर में उसके नाम का अभ्यास करेगा। इसीलिए ही सन्तों ने हमेशा यही उपदेश दिया है कि यदि कोई मन्दिर में पूजा करने की इच्छा करता है तो उसके लिए उसका अपना शरीर ही एक मात्र मन्दिर है। उसे अपने शरीर में ही परमात्मा की आराधना करनी चाहिए और यदि कोई सगुण देवता की पूजा करना चाहता है तो उसे किसी धाम पर जाकर किसी मूर्ति पर कुछ चढ़ाने की जरूरत नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, लक्ष्मी, सरस्वती आदि सभी देवी–देवताओं की जीवित मूर्तियाँ माता–पिता, बुजुर्ग, स्त्री, बच्चों के रूप में उसके घर में ही उपस्थित हैं। किसी को कहीं भी बाहर जाकर धक्के खाने की जरूरत ही नहीं है। उसको अपने जीवित देवी–देवताओं के आशीर्वाद से अपने घर पर ही सब कुछ मिल सकता है।

"मेरा लड़का शमशेर सिंह 'इन्डियन नेवी' में कार्यरत है। इसको अक्तूबर 2003 में पीलिया की बीमारी हो गई थी। इसके बाद में इसको आई.एन.एच.एस. कल्याणी (**I.N.H.S.Kalyani**) भारतीय नौ सेना अस्पताल पोत विशाखापतनम में भर्ती कर दिया गया। लेकिन वहाँ जब इसको कोई आराम नहीं हुआ, तो इसके बाद 25 नवम्बर 2003 को **Sick Leave** यानि बीमारी की छुट्टी पर घर पर भेज दिया गया।

घर आने पर मैंने इसको अनेक जगहों की दवाइयाँ दिलवाईं, लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। अन्ततः इसको भूख लगनी बिल्कुल बन्द हो गई और इतना कमजोर हो गया कि इसका पैदल चलना भी मुश्किल हो गया। जब कहीं कोई फर्क ही नहीं हुआ तो लाचार होकर मैं इसको 18 दिसम्बर 2003 को दिनोद दरबार में हुजूर महाराज जी के पास लेकर आया। महाराज जी ने इस पर अपनी दया द ष्टि डाली और इसको प्रथम द ष्टि से ही ठीक कर दिया और आशीर्वाद दिया कि अब यह बिल्कुल ठीक हो जाएगा। चमत्कार यह हुआ कि इसको उसी समय से भूख लगनी शुरू हो गई और अब यह बिल्कुल ठीक हो गया है और बिल्कुल ही स्वस्थ है।"

मास्टर कंवर सिंह
गांव/पो. मिसरी,
जिला भिवानी (हरियाणा)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई-बहन के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

✸ आवश्यक सूचना ✸

सभी सत्संगियों की जानकारी के लिए यह प्रसारित किया जाता है कि बड़े महाराज जी (पूज्य परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज) ने अपने जीवन काल में ही 'राधास्वामी सत्संग ट्रस्ट (दिनोद), भिवानी' के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की थी।

उन्हीं के उत्तराधिकारी हुजूर कंवर सिंह जी सत्संगों द्वारा उनका उद्देश्य आगे बढ़ा रहे हैं। परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज ने इनके अलावा किसी को अधिकृत नहीं किया था।

लेकिन कुछ अवांछित व्यक्ति अपने स्वार्थवश अपना अलग सत्संग चलाकर हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज के नाम के साथ जोड़ रहे हैं जो कि एक दण्डनीय अपराध है।

अतः सभी सत्संगियों से अनुरोध है कि वे उन अवांछित व्यक्तियों के नाम तथा वे प्रमाण जिनके आधार पर वे स्वयं को हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज से जोड़े हुए हैं, ट्रस्ट कार्यालय में भेजें ताकि दस्तावेजों के आधार पर उनसे कानूनी कार्यवाही की जा सके।

सचिव, राधास्वामी सत्संग दिनोद
भिवानी (हरियाणा)

प्रायः सत्संगी भाई और बहनें रविवार के दिन दवाइयों और बिमारियों के लिए अनुरोध करते हैं। ऐसा करना संगत के लिए अच्छा नहीं लगता। अतः रविवार के दिन तो केवल सत्संग और आशिर्वाद के लिए ही आएं।

सचिव, राधास्वामी सत्संग दिनोद
भिवानी (हरियाणा)